

दलहन संस्थान में कृषक - वैज्ञानिक परिचर्चा का आयोजन



वर्ष 2017-18 में दलहन उत्पादन लगभग 240 लाख टन होने का अनुमान है जो कि एक कीर्तिमान है। इस उत्कृष्ट उपलब्धि को दिनांक 17 मार्च, 2018 समारोह पूर्वक मनाने हेतु संस्थान प्रांगण में कानपुर, फतेहपुर तथा हमीरपुर क्षेत्र के दलहन उत्पादन से जुड़े लगभग 1000 प्रगतिशील किसानों, वैज्ञानिकों, जन प्रतिनिधियों तथा कृषि शिक्षा एवं प्रसार से जुड़े अधिकारियों को आमंत्रित किया गया। भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर में दिनांक 17 मार्च, 2018 को कृषक - वैज्ञानिक परिचर्चा - 2018 का आयोजन हुआ इस कृषक - वैज्ञानिक परिचर्चा का उद्घाटन आज माननीय कृषि राज्य मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार, श्री रणवेंद्र प्रताप सिंह, मुख्य अतिथि ने किया। माननीया विधायिका, कल्याणपुर क्षेत्र, श्रीमती नीलिमा कटियार इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थीं। इस पुनीत अवसर पर भारत के माननीय प्रधानमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी जी देश में 25 नये कृषि विज्ञान केन्द्रों की आधारशिला रखते हुये लगभग 7 लाख किसानों, वैज्ञानिकों, कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों तथा शोध संस्थानों के निदेशकों आदि को भी संबोधित किया। संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में पधारे सभी आमंत्रित कृषक बन्धु इस सजीव प्रसारण से जुड़े। इस अवसर पर कृषि कार्य से जुड़ी दो उपयोगी बुलेटिन्स का विमोचन भी किया गया।



वैज्ञानिकों का आवाहन करते हुए, मुख्य अतिथि ने कहा कि साल 2016-2017 दलहनी फसलों के लिए बहुत ही अच्छा रहा है। इस वर्ष कुल दलहन उत्पादन 23.13 मि. टन तक के रिकार्ड स्तर तक पहुंचा जो अभी तक का सबसे अधिक उत्पादन रहा है। और खुशी की बात यह है कि साल 2017-2018 में दलहन की पैदावार 23.95 मि. टन तक पहुंचने की सम्भावना है। हलाकि 2020 तक दलहन की पैदावार 22.00 मि. टन का लक्ष्य था। इससे यह प्रतीत होता है की हम दलहन उत्पादन में स्वावलम्बी होने की स्थिति में पहुंच रहे हैं। इसका श्रेय उच्च/आधुनिक तकनीकी और सरकार की नीतियों को दिया जाता है। साथ ही आवश्यक है कि वैज्ञानिकों, कृषकों, शोधकर्ताओं के मध्य भरपूर वार्ता/संचार हो, कृषकों के मोबाइल नम्बरों पर आधारित डाटाबेस तैयार किया जाए ताकि नवीनतम प्रौद्योगिकियों की जानकारी कृषकों तक समय-2 पर पहुँचाई जा सके।

वैज्ञानिकों का आवाहन करते हुए, विशिष्ट अतिथि ने इस बात पर विशेष बल दिया कि वर्ष 2020 तक दलहन उत्पादन के निर्धारित लक्ष्य अर्थात 24 मिलियन टन को प्राप्त करने के लिए प्रयास किए जाए जिससे दालों के क्षेत्र में देश न केवल आत्मनिर्भर हो सके बल्कि आयात में होने वाले खर्च को भी बचाया जा सके। उन्होंने बताया कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में सभी साझेदारों की भूमिका विशेष है तथा सहभागिता पर आधारित कार्यक्रमों को विशेष रूप से चलाने की आवश्यकता है। उन्होंने दलहन वैज्ञानिकों के शोध कार्यों की भरपूर सराहना की।

डॉ० नरेन्द्र प्रताप सिंह, निदेशक, आई.आई.पी.आर. कानपुर ने संस्थान की विभिन्न गतिविधियों और उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों एवं राष्ट्रीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत दलहनों पर चल रही विभिन्न परियोजनायें अत्यन्त लाभप्रद रही हैं और उनसे उन्नत प्रजातियों, तकनीकी तथा मानव संसाधन विकास में सफलता मिली है। धन्यवाद प्रस्ताव डॉ० राजेश कुमार, विभागाध्यक्ष ने प्रस्तुत किया।

Scientist – Farmer Meet organized at IPR, Kanpur



On 17th March, a grand Scientist – Farmer Meet was organized at IPR, Kanpur. The programme was inaugurated by Hon. State Agriculture Minister, Shri Ranvendra Pratap Singh, the Chief Guest and Hon. MLA, Kalyanpur, Kanpur Smt. Neelima Katiyar was the guest of honour in the presence of Dr N.P. Singh, Director IPR, Kanpur. Around 1000 participants including eminent scientist, educationist, students, industrialist and farmers from different parts of the country participated in this important Meet. During this mega event, scientists discussed the research activities and advancements in achieving the self sufficiency and nutritional security in pulses in the country. On the occasion, two important bulletins were also released .

Speaking on the occasion, the Chief Guest congratulated the pulse scientists for achieving an all time high 22.95 million tonnes production of pulses. He expressed his concern over the fluctuating production of pulses in the country. He said as pulses are grown largely in rainfed areas, they suffer a lot due to both high and low rainfall. He

urged the scientists to work for the all round benefit of the farmers. He said that farmers ought to be partners in various research based programmes and this research if applied on their fields, will surely give better results. On this occasion, admiring the research works of the IIPR scientists, the guest of honour, Smt. Neelima Katiyar also expressed her views on the research advancements in achieving the self sufficiency and nutritional security in pulses in the country.



Dr N.P. Singh, Director IIPR, briefed about the activities going on in the institute. He informed that the various projects under National programmes have been successful. In the `International Year of Pulses` research and development activities of the institute were further strengthened towards increasing productivity which resulted in all time high production of pulse to the tune of 22.95 million tonnes.

Dr Rajesh Kumar, Head of the Social Science Division offered vote of thanks to all the esteemed guests and participants.


